Class- B.Com I
Subject- BMC
Paper I (S)
Topic- Planning
Lecture – 21
By. Dr. C P Sahu
Marwari College. Dar

नियोजन (Planning) (1)

प्रबन्ध की प्रक्रिया नियोजन से आरम्भ होता है। किसी भी कार्य को करने से पहले उसके बारे में सोच-विचार कर योजना तैयार करके, उसी आधार पर कार्य करने से अधिक सफलता मिलती है। बिना योजना बनाये किसी कार्य को करने में कठिनाई होती है। खासकर के व्यावसायिक संस्थाओं की समस्याओं की समाधान के लिए समन्वित ढंग से उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सोच-समझकर योजना बनाना।

नियोजन का अर्थ भविष्य के बारे में अनुमान लगाना है। नियोजन मूल रूप से कार्यों को सुव्यवस्थित ढंग से करने, कार्य को करने से पूर्व उस पर मनन करने तथा कार्यों को अनुमानों की तुलना में तथ्यों के आधार पर करने का प्राथमिक रूप में एक मानसिक चिन्तन है। योजना विभाग का कार्य विभिन्न विभागों में कार्य करने वाले श्रमिकों के लिए योजना बनाना है। योजना विभाग प्रबन्ध का हृदय है जिसका एकमात्र कार्य उत्पादन के विभिन्न ~~वस्तुओं~~ पहलुओं में कार्यरत कर्मचारियों की आवश्यकता को पूरा करना है।

नियोजन का कार्य अन्य सभी क्रियाओं व कार्यवाही से पहले होता है क्योंकि योजना के द्वारा ही निर्धारित होता है कि लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए कैसे निर्णय लिए जाये।

नियोजन कार्यों का पूर्वानुमान तथा निर्धारण है उसके द्वारा हम भविष्य में झाँकने का प्रयास करते हैं। योजना के माध्यम से उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को निश्चित किया जाता है जिससे कार्य मार्गों का निर्धारण व चयन किया जाता है।

नियोजन की परिभाषाएँ —

जॉर्ज आर टैरी - "नियोजन भविष्य में देखने की विधि या कला है। इसमें भविष्य की आवश्यकताओं का रचनात्मक पुनरावलोकन किया जाता है जिससे निर्धारित लक्ष्यों के संदर्भ में वर्तमान प्रयासों को उनके अनुरूप बनाया जा सके।"

कोन्ट्ज के अनुसार - "नियोजन एक बौद्धिक प्रक्रिया है, कार्य करने के लिए मार्गों का सचेत निर्धारण है, क्रियाओं के उद्देश्यों, तथ्यों तथा विचारित

Scanned with CamScanner

अनुमानों पर आधारित करना है।"

<u>न्यूमैन के अनुसार</u> "सामान्यतः भविष्य में क्या करना है, इसे पहले से तय करना ही नियोजन कहलाता है।

<u>हेले के अनुसार</u> - "क्या करना चाहिए, इसका पहले से ही तय किया जाना नियोजन है। इसमें विभिन्न वैकल्पिक उद्देश्यों, नीतियों, विधियों, तथा कार्यक्रमों में से चयन करना शामिल होता है।"

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रबन्धकों को यह सोचना पड़ता है कि उनके पास जो साधन उपलब्ध है उनके आधार पर कार्य करने का सबसे अच्छा तरीका क्या हो सकता है तथा भविष्य में आने वाली कठिनाइयों को किस प्रकार हल किया जा सके। अतः कहा जाता है कि नियोजन "जहाँ हम हैं और जहाँ हमें पहुँचना है।"

<u>नियोजन की विशेषताएँ</u> -

(1) नियोजन एक निरन्तर प्रक्रिया (2) नियोजन योजना एक एकता
(3) नियोजन पूर्वानुमानों पर आधारित (4) नियोजन निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति का साधन (5) नियोजन पूर्वानुमान पर आधारित
(6) एक बौद्धिक प्रक्रिया (7) एक पारस्परिक निर्भरता
(8) लोचपूर्ण प्रक्रिया (9) नियोजन एक प्रबन्ध का प्राथमिक कार्य

Scanned with CamScanner

नियोजन के उद्देश्य :-

(1) भावी कार्यों में निश्चितता लाना (2) प्रभावशाली नियंत्रण सम्भव (3) भावी जोखिम में कमी (4) कुशलता में वृद्धि करना (5) लक्ष्यों की प्राप्ति करना (6) पूर्वानुमान लगाना (7) प्रबन्ध प्रयत्नों में मितव्ययिता लाना (8) सीमित साधनों का अधिकतम उपयोग (9) समन्वय स्थापित करना

नियोजन के महत्व या आवश्यकता :—

नियोजन प्रबन्ध के अन्य कार्यों जैसे - संगठन, उत्प्रेरण तथा नियंत्रण का आधार है। नियोजन द्वारा क्रियाओं का निर्धारण किये बिना कोई कार्य नहीं होगी। नियोजन के बिना व्यवसाय अर्थहीन हो जाता है। नियोजन आवश्यक है क्योंकि यह सभी प्रबन्धकीय कार्यों का मूलाधार है। इसके बिना संगठित करने के लिए कुछ नहीं है तथा निर्देशन एवं नियंत्रण की आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी। जब योजना नहीं बनाया जायेगा तो घटनाओं को भाग्य भरोसे छोड़ना होगा।

नियोजन के महत्व को निम्नलिखित बातों से स्पष्ट कर सकते हैं (4)

(1) उद्देश्य को ध्यान केन्द्रित करने के लिए - नियोजन लक्ष्य निर्धारित करता है। उसे पूरा करने के लिए सर्वोत्तम तरीका निश्चित करता है। इस तरह नियोजन उद्देश्यों पर ध्यान केन्द्रित करता है। प्रत्येक क्रिया उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाती है।

(2) प्रतिस्पर्धा करने की शक्ति में वृद्धि - नियोजन वस्तु की किस्म, कीमत, उत्पादन की प्रकृति में अनुकूल परिवर्तन लाता है। मशीनों की कार्यक्षमता में वृद्धि कर नये उपकरण कम्प्यूटराइज मशीन लगाया जाता है जिससे ग्राहकों की माँग को पूर्ति करने में सक्षम हो पाता है।

(3) प्रभावशाली नियंत्रण संभव - नियोजन प्रबन्धकों को नियंत्रण करने के लिए मापदण्ड प्रस्तुत करता है जिसके आधार पर कर्मचारियों की प्रगति का मूल्यांकन किया जाता है। जिससे प्रभावी नियंत्रण सम्भव हो पाता है।

(4) समन्वय में सहायक - नियोजन के द्वारा लक्ष्य तक पहुँचने के लिए विभिन्न तथा कठिन कार्यों में समन्वय किया जाता है। इसके अन्तर्गत यह ध्यान दिया जाता है कि एक कार्य को छोड़ा या नहीं जाए। विभिन्न कार्यों में आपस में टकराव पैदा न हो। इस तरह नियोजन संस्था के कार्यों में एकता एवं समन्वय स्थापित करता है।

(5) भावी अनिश्चितता तथा परिवर्तन का सामना करने के लिए (5)

भविष्य हमेशा अनिश्चित होता है तथा व्यवसाय में प्रतिदिन नए परिवर्तन आते रहते हैं। इसके अन्तर्गत प्रबन्धक भविष्य की अनिश्चितताओं तथा परिवर्तनों का पूर्वानुमान लगाता है और इसी आधार पर योजना बनाया जाता है।

(6) नये विचार एवं सृजनात्मक विचारों को प्रोत्साहित करता है

एक उत्तम नियोजन प्रक्रिया व्यक्तिगत भागीदारी के भागों की व्यवस्था करती है, संस्था तथा उसके वातावरण के बारे में अनेक विचारों को जन्म देती है, स्वतंत्रता तथा स्व मूल्यांकन के वातावरण को प्रोत्साहित करती है तथा प्रबन्धकों को अधिक श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है।

(7) विकास एवं सुधार में वृद्धि करना - इसके अन्तर्गत प्रत्येक विभाग के लिए प्रमाप निर्धारित किया जाता है। उससे अपव्यय तथा अनावश्यक क्रियाओं का अन्त हो जाता है जिससे संस्था में सुधार एवं विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

—— × ——

Scanned with CamScanner